परमात्म ऊर्जा

अपने आदि और अनादि स्वस्थिति को जानते हो? सदा अपनी स्व स्थिति में स्थित रहने का अटेन्शन रहता है? जो स्व स्थिति अर्थात् अनादि स्थिति है उस स्व स्थिति में स्थित होना मुश्किल लगता है? और स्थिति में स्थित होना मुश्किल हो भी सकता है, लेकिन स्व स्थिति में स्थित होना तो स्वतः ही और सरल है ना। स्व स्थिति सदा रहती। अगर चारों में से कोई की भी कमी है तो स्व स्थिति में भी कम स्थित हो सकता है। स्व स्थिति का जो वर्णन करते हो उसको सामने रखते हुए फिर सोचो कि कौन-सी चार बातें सदा साथ होनी चाहिए? स्व स्थिति के लक्षण क्या होते हैं? जो भी बाप के गुण हैं उन गुणों का स्वरूप होना इसको कहते हैं स्व स्थिति व अनादि स्थिति। तो ऐसी स्थिति सदा रहे इसके लिए चार बातें कौन-सी आवश्यक हैं? स्मृति में आता है जिन चार बातों के होने से अनादि स्थिति ऑटोमेटिकली रहती है? सुख, शांति, आनन्द, प्रेम की स्थिति स्वतः ही रहती है? पहले यह सोचो कि अनादि स्थिति से मध्य की स्थिति में आते ही क्यों हो? इसका कारण क्या है? (देहअभिमान) देह अभिमान में आने से क्या होता है, देह अभिमान में आने के कारण क्या होते हैं? पर स्थिति सहज और स्व स्थिति मुश्किल क्यों लगती है? देह भी तो स्व से अलग है ना! तो देह में सहज स्थित हो जाते हो और स्व में स्थित नहीं होते हो, कारण? वैसे भी देखो तो सदा सुख व शान्तिमय जीवन तब बन सकती है जब जीवन में चार बातें हों। वह चार बातें हैं - हेल्थ, वेल्थ, हैप्पी और होली। अगर यह चार बातें सदा कायम रहें तो दुःख और अशान्ति कभी भी जीवन में अनुभव न करें। ऐसे स्व स्थिति का स्वरूप भी है- सदा सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम स्वरूप में स्थित रहना। तो स्व स्थिति से भी विस्मृति में आते हो इसका कारण क्या होता है? वेल्थ की कमी व हेल्थ की कमज़ोरी व होली नहीं बनते हो। इसके साथ साथ हैप्पी अर्थात् हर्षित नहीं रह सकते हो। तो हेल्थ, वेल्थ कौन सी? आत्मा सदा निरोगी रहे, माया की कोई भी व्याधि आत्मा पर असर न करे इसको कहा जाता है हेल्दी। और वेल्दी भी हो अर्थात् जो खज़ाना मिलता रहता है व जो सर्व शक्तियां बाप द्वारा वर्से में प्राप्त हुए हैं उस प्राप्त हुए ज्ञान खज़ाने को व सर्व शक्तियों के खज़ाने को सदा कायम रखो तो बताओ स्व स्थिति से नीचे आ सकते हो? इतना ही फिर होली। संकल्प, स्वप्न में भी कोई अपवित्रता ना हो तो स्व स्थिति स्वतः ही हो जाएगी। इन चार बातों की कमी होने कारण स्व स्थिति में सदा नहीं रह सकते हो। यह चार बातें चैक करो - हेल्दी, वेल्दी कहाँ तक बने हैं? हेल्दी, वेल्दी और होली यह तीनों ही बातें है तो हैप्पी ऑटोमेटिकली होंगे। तो इन चार बातों को सदा ध्यान में रखो।

कथा सरिता

बोलने वाली गुफा

एक विशाल जंगल था। उस जंगल में खरनख नाम का शेर रहता था। वह शेर जंगल के जानवरों को मारकर अपनी भूख मिटाता था। एक बार उसने शिकार करने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु उसके हाथ कोई भी शिकार नहीं आया। अब वह भूख से परेशान हो गया था। धीरे-धीरे सूरज डूबने लगा, शेर जिस जगह शिकार करने का प्रयत्न कर रहा था वहीं पास में एक गुफा भी थी। खरनख शेर उस गुफा में चला गया और सोचने लगा इस गुफा में कोई ना कोई जानवर अवश्य रहता होगा और वह शाम को अपनी गुफा में ज़रूर आयेगा और जैसे ही वह गुफा में प्रवेश करेगा मैं उसका शिकार कर लूंगा और मेरी भूख मिटा लूंगा। जब तक वह जानवर इस गुफा में नहीं आ जाता तब तक मैं यहीं आराम करता हूँ। वह गुफा एक गीदड़ की थी, उस गीदड़ का नाम दधिपुच्छ था। शाम होने पर गीदड़ अपनी गुफा के पास आ गया और जैसे ही वह गुफा में घुसने वाला था उसने देखा गुफा के पास शेर के पंजों के निशान गुफा के अन्दर जाने के तो हैं परन्तु गुफा से बाहर निकलने के निशान नहीं हैं। दधिपुच्छ नामक गीदड़ समझ गया कि उसकी गुफा में कोई शेर गया तो है परन्तु वह वापस आया या नहीं इसका पता कैसे चलेगा।

गीदड़ ने उपाय सोच लिया। वह गुफा के पास गया और ज़ोर से बोलने लगा- "मेरी बोलने वाली गुफा आज तू शांत क्यों है, तूने मुझसे कहा था कि अगर मैं लौट आया तो तू मुझसे बात करेगी, तू मुझसे बात क्यों नहीं कर रही है?" गीदड़ को बोले हुए कुछ समय हो गया परन्तु गुफा ने कोई जवाब नहीं दिया। गीदड़ ने गुफा के सामने गुफा को संबोधित करते हुए दुबारा फिर से वही बातें कही जो थोड़ी देर पहले की थी। गीदड़ की बातें सुनकर शेर को लगा कि शायद यह गुफा खुद बोलती हो जब भी गीदड़ आता हो तो यह इससे बात करती होगी परन्तु आज मेरे डर से यह बोल नहीं रही है। अगर यह गुफा नहीं बोली तो गीदड़ को शक हो जाएगा और वह इधर से चला जायेगा और मैं भूखा रह जाऊंगा। इसलिए मैं ही बोल देता हूँ और यह सोचकर शेर स्वयं बोलने लगा- "आओ गीदड़ मैं कब से तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी, अन्दर आ जाओ। जैसे ही अन्दर से आवाज़ आई गीदड़ समझ गया कि अन्दर कोई बेवकूफ शेर है जो गीदड़ के गुफा में जाने का इंतज़ार कर रहा है और अन्दर जाते ही उसका शिकार कर लेगा। गुफा के अन्दर से आती आवाज़ सुनकर गीदड़ वहाँ से भाग गया और शेर की गर्जना सुनकर गुफा के आसपास के जानवर भी वहाँ से चले गए। खरनख नामक शेर यह जानता था कि गुफा नहीं बोल सकती फिर भी शेर ने अपनी मूर्खता से उस गीदड़ को भगा दिया जिसे वह खाना चाहता था। गुफा को छोड़कर शिकार की तलाश में चला गया और गीदड़ को अपनी गुफा फिर से मिल गई।

शिक्षा : शेर, गीदड़ और बोलने वाली गुफा की कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि अपनी बुद्धिमानी से आने वाले संकट से बचा जा सकता है।"

फिरोज़पुर-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र की ओर से सेन्ट्रल जेल में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. डिंपल, ब्र.कु. दीपाली, ब्र.कु. जगदीश, डॉ. राजकुमार द्वारा सभी कैदियों को बीती बातों से जीवन में कुछ सीख और कुछ अच्छा करने की शिक्षा दी। साथ उपस्थित हैं अनुराधा जी,चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट कम सेक्रेटरी,डिस्ट्रिक्ट लीगल सर्विसेज अथॉरिटी तथा अन्य कैदी माताएं-बहनें।

ओआरसी-गुरुग्राम(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर में आयोजित तीन दिवसीय 'मैजिक ऑफ मेडिटेशन' कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. ममता दीदी,अलवर। कार्यक्रम में उपस्थित रहे न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. स्वप्न गुप्ता,जीबी पंत हॉस्पिटल, ब्र.कु. विधात्री, ब्र.कु. सुनैना, ब्र.कु. दिव्या, ब्र.कु. येशु, ब्र.कु. पारुल, ब्र.कु. फाल्गुनी एवं योगा विशेषज्ञ ब्र.कु. नरेन्द्र। ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभा को सम्बोधित किया।

शाहदरा चुंगी-उ.प्र.। मोहन नगर दिव्य धाम सेवाकेन्द्र द्वारा डॉ. मुकेश गोयल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विनीता व ब्र.कु. नवीना।

बरेली-सिविल लाइंस(उ.प्र.)। मानव सेवा क्लब द्वारा सीमा स्मृति साहित्य सम्मान एवं विमोचन समारोह में ब्र.कु. प्रियंका को शान्ति नारी सम्मान से सम्मानित करते हुए कवयित्री शैलजा दुबे, कवयित्री सोन स्वरूप। साथ हैं मानव सेवा क्लब अध्यक्ष सुरेन्द्र बीनू सिन्हा, महासचिव प्रदीप माधवर एवं रमेश गुप्ता।

कामख्यागुड़ी-पश्चिम बंगाल। बसंत उत्सव पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संपा बहन, ब्र.कु. डॉ. स्वपन, भुवन जी,प्रसिद्ध व्यवसायी व समाज सेवक, प्रिंसिपल मिलि जी,कामख्यागुड़ी कला अकादमी, बकुल जी,गांव के मुखिया, परिमल जी,समाज सेवक एवं द्रुपति मुर्मू जी,समाज सेविका।

पारलाखेमुंडी-ओडिशा। ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में जिला मुख्य न्यायाधीश प्रणव कुमार राउतराय, ब्र.कु. सुजाता बहन तथा अन्य अधिकारीगण।

अलीगढ़-रघुवीरपुरी(उ.प्र.)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा रघुवीरपुरी शाखा के वार्षिक उत्सव में आमंत्रित स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता ने सभी को ईश्वरीय संदेश दिया। कार्यक्रम में लगभग 47 आरएसएस कार्यकर्ता मौजूद रहे।